(g) what are the steps contemplated by the Government of India to meet this shortage?

The Minister of Industry in the Ministry of Commerce and Industry (Shri Kanungo): (a) Perhaps what the Hon'ble Member means by synthetic diamonds is really synthetic stones like sapphires and rubies. There is no shortage of synthetic stones or gems in the country.

(b) Does not arise

(c) They are produced within the country except coloured stones other than ruby and white, which are imported under Export Promotion Scheme.

(d) The production of the factory producing these stones is at present 1,000 kg., per annum. The factory is located at Mettupalayam in Madras State.

(e) The requirements of the Lapidary industry for white stones and rubies is met in full from indigenous production.

(f) Some traders and jewellers from Rajasthan have represesnted about the mode of distribution of the stones manufactured in India.

(g) Though there is no shortage as such, the Mettupalayam factory has undertaken a programme of expansion. Arrangements are being made to distribute the synthetic stones produced at Mettupalayam to the exporters at Jaipur through the Rajasthan Small Industries Corporation.

विलास की वस्तुओं के लिए आयात के विदेशी मुद्रा

१४९१. **श्री उटिया :** क्या वाणिज्य तथा उद्योग मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि १९६०, १९६१ और १५ जुलाई, १९६२ तक भारत में व्यापारियों को विलास वस्तुओं जैसे कि टैरिलीन कपड़ा, प्रसाधन सामग्री आदि के आयात के लिये कितनी विदेशी मुद्रा दी गई ?

वाणिज्य तथा उद्योग मंत्रालय में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मंत्री (श्री मनुभाई शाह) : विलास की वस्तुओं जैसे टैरिलीन कपड़ा और प्रसाधन सामग्री का आयात बिल्कुल बन्द कर दिया गया है और उनके आयात के लिये कोई विदेशी मुद्रा नहीं दी जाती । केवल फिल्म स्टुडियो के लिये मेक-अप में काम आने वाली कुछ प्रसाधन सामग्री जैसे कोलोडियोन, लिनग्लास, दांतों का इनेमल ब्लैक, बैरोनियों का मेक-अप करने वाली तथा कुछ ऐसी अन्य विशिष्ट प्रसाधन सामग्री का बहुत ही थोड़े परिणाम में आयात होता है जो देश में नहीं मिलती और जिनका थोड़े मूल्य में आयात करने की अनुमति मिली हुई है । अक्तूबर, १९५९ से मार्च १९६० तथा अक्तूबर १९६१ से मार्च १९६२ तक की लाइसेंस अवधियों में प्रसाधन की वस्तुओं (अंगराग की सामग्री) के लिये कितने संख्या में तथा कितने-कितने मूल्यों के लाइसेंस जारी किये गये, यह नीचे दिखाया गया है :—

लाइसेंस की अवधि	लाइसेंसों की संख्या	मूल्य (हजार रु० में)
अक्तू. ५९—मार्च, '६० .	१२	५४
अप्रैल—सितम्बर, '६० .	१५	४५
अक्तूबर, ६०—मार्च, '६१	७	३६
अप्रैल—सितम्बर, '६१ .	१८	११
अक्तूबर, '६१—मार्च, '६२ (२८.४.६२ तक)	१	नगण्य

अब भारत में लगभग सभी किस्मों की प्रसाधन सामग्री बनने लगी हैं । फिल्म स्टुडियो के मेक-अप में काम आने वाली सामग्री को देश में ही तैयार करने की स्थिति भी काफी सन्तोषजनक है तथा देश निकट भविष्य में ही इन वस्तुओं के मामले में स्वावलम्बी हो जायगा ।

Enquiry of Death of D.I.G., Police in Nagaland

1492. Shri D. C. Sharma: Will the **Prime Minister** be pleased to refer to